अंकोल

मैं कामधेनु सेवक सहदेव भाटिया विद्युत अभियंता अखिल विश्व कामधेनु परिवार 21 सी, जयराज कोम्प्लेक्स, सोनी नी चाल, ओढव मार्ग अहमदाबाद 382415 मोबाइल 9662407242, 8733008557 पहली बार द्वापर युग की अंकोल नस्ल पर पुस्तक एवं वस्तुनि-ठ प्रश्नोंत्तर के साथ में प्रकाशित कर रहा हूं.

द्वापर युग की इस प्रजाति की आवश्यकता कलियुग में है. कलियुग में यह गोवंश भारत से पूरी तरह से लुप्त हो गया है.

भारत में अंकोल की जानकारी को हर व्यक्ति तक पहुंचाने के लिए क्षेत्रीय भा-ाओं में पुस्तक को प्रकाशित करना है.

आपके हर प्रकार के सहयोग की आवश्यकता है. आप यदि मेरे विचारों से पूरी तरह से सहमत हैं तो तुरन्त ही संपर्क कर मेरी मदद करें. आप यदि विज्ञापन के रुप में आर्थिक सहयोग करें तो मैं लक्ष्य तक पहुंच कर परिणाम प्राप्त कर सकता हूं.

वि-ाय सूची

1. अंकोल

अंकोल

1 अंकोल नस्ल क्या है?
अ. वत्सप्रधान ब. दुग्धप्रधान
स. सर्वांगी द. वर्णसंकर

2 अंकोल नस्ल के भारत में एक बार फिर से लाने के लिए क्या करना है?
अ. अंकोल कंजरवेशन ट्रस्ट
ब. नंदी पार्क
स. पंचगव्य डिप्लोमा
द. गो अभ्यारण

3 अंकोल नस्ल कहां पर विकसित करनी चाहिए?
अ. गुजरात ब. मध्यप्रदेश
स. सिक्किम द. हरियाणा

4 अंकोल नस्ल के लिए कौन मदद करेगा?
अ. आई.सी.ए.आर. ब. गो सेवा आयोग
स. जनता द. मानव

5 अंकोल नस्ल का मूल निवास कहां पर है?
अ. पूर्वी आफ्रीका के मोबूतू झील से तांगानयीका झील के बीच में है.
ब. उत्तरी युगांडा
स. तंजानिया
द. केनिया

6 अंकोल नस्ल की क्या पहचान है?
अ. सींग बहुत ही अधिक लम्बे होते हैं.
ब. देखने में बहुत ही सुंदर है.
स. कद बहुत ही अधिक छोटा है.
द. रोग प्रतिरोधक क्षमता अधिक है.

7 अंकोल नस्ल का क्या उपयोग है?
अ. खेती करने ब. दूध

स. नस्ल सुधार द. मांस

8 अंकोल नस्ल कहां से लायी गयी है?
अ. भारत ब. पाकिस्तान
स. बंगलादेश द. श्रीलंका

9 अंकोल नस्ल से अमेरिका में कौन सी नयी नस्ल विकसित की गयी?
अ. अंकोल वाटसी ब. ब्राहमण
स. गुजराती द. आफ्रीकेंडर

10 आफ्रीका में अंकोल मंहगे दामों में खरीद कर क्यों पाली जाती है?
अ. लम्बे सींग के कारण ब. अच्छे कद के कारण
स. सुंदरता द. मांस

11 अमेरिका में अंकोल नस्ल क्यों लायी गयी थी?
अ. नस्ल सुधार करने के लिये ब. मांस
स. नयी नस्ल तैयार करने के लिये द. खेती करने

12 अंकोल नस्ल भारत से कब लुप्त हुई थी?
अ. 7000 साल पहले ब. 6000
स. 5000 द. 4000

13 अंकोल नस्ल का उल्लेख कहां पर मिलता है?
अ. मिश्र के पिरामिडों में ब. अमेरिका में
स. आफ्रीका में द. भारत में

14 अंकोल नस्ल वर्तमान में भारत में क्यों चाहिये?
अ. नस्ल सुधारने ब. नयी नस्ल तैयार करने
स. दूध द. खेती करने

अंकोल वाटसी

15 अंकोल वाटसी कहां पर उपलब्ध है?
अ. अमेरिका ब. आफ्रीका
स. मिश्र द. भारत

16 अंकोल वाटसी नाम क्यों है?
अ. वाटसी नाम की आदिवासी जाति आफ्रीका में पालती है.
ब. अंकोल नाम की आदिवासी जाति आफ्रीका में पालती है.
स. अंकोल से अंकोल वाटसी का विकास किया जा रहा है.
द. पता नहीं है.

17 अंकोल वाटसी भारत में लुप्त क्यों हो गयी है?
अ. अज्ञानता के कारण
ब. भैंस को बढ़ावा देने के कारण
स. वर्णसंकर को बढ़ावा देने के कारण
द. पता नहीं है.

18 अंकोल वाटसी को अमेरिका में कब लाया गया था?
अ. 1920 से 1930 के बीच में ब. 1925
स. 1930 द. 1920

19 अंकोल वाटसी को कहां से अमेरिका में लाया गया था?
अ. यूरोपियन झू से ब. चोरी करके
स. भारत द. आफ्रीका

20 अंकोल वाटसी नस्ल की मांग अमेरिका में क्यों है?
अ. सबसे अधिक वसा के कारण

ब. मांस में कम वसा तथा कम कोलेस्ट्रेल है.
स. गरमी अधिक सहन करने की क्षमता है.
द. रोग प्रतिरोधक क्षमता अधिक है.

21 अंकोल वाटसी नस्ल के बारे में कहां पर जानकारी है?
अ. ओखलामा विश्वविद्यालय अमेरिका में.
ब. इजीप्ट के पिरामिडों में.
स. नील घाटी में
द. भारत में

22 अंकोल वाटसी नस्ल भारत से कब आफ्रीका गयी?
अ. 2000 वर्षों पूर्व ब. 6000 वर्षों पूर्व
स. 4000 वर्षों पूव द. पता नहीं है.

23 अंकोल वाटसी की प्रमुख पहचान क्या है?
अ. दूध में 10 प्रतिशत वसा ब. बड़े सींग
स. लाल रंग द. सुंदरता

24 अंकोल वाटसी गाय का वजन कितना है?
अ. 400 से 600 किलोग्राम ब. बहुत कम
स. 500 किलोग्राम द. 800 किलोग्राम

25 अंकोल वाटसी बैल का वजन कितना है?
अ. 500 से 800 किलोग्राम ब. 400 से 600 किलोग्राम
स. बहुत कम द. पता नहीं

26 अंकोल वाटसी की मांग भारत में क्यों है?
अ. भैंस के बराबर वसा है
ब. नस्ल सुधार करने के लिये
स. रोग प्रतिरोधक क्षमता बहुत ही अच्छी है.
द. दुर्लभ है.

27 अंकोल वाटसी के दूध में अधिकतम वसा की प्रतिशत मात्रा कितनी है?
अ. 10 ब. 5 स. 4 द. 3

अंकोल वाटसी

भारत में त्रेता के समय सूर्यवंश में भगवान श्री राम के समय में नारद संहिता के अनुसार गोवंश का विकास चरम सीमा पर था. भगवान श्री राम ने अनेकों विशाल यज्ञ करवाये थे. भगवान श्री राम के पास में अपार ऐश्वर्य लंबे सींगों वाले गोधन के कारण था.

दस हजार करोड़ लंबे सींगो वाले गोवंश का दान भगवान श्री राम ने ब्राहमणों को किया था. अंकोल के समान लंबे सींगो वाले गोवंश के कारण रामराज्य प्रसिद्ध है.

द्वापर में भगवान श्री कृ-ण के समय में लंबे सींगों वाले गोवंश के अदभुत विकास के बारे में व्रज में गर्ग संहिता के अनुसार वर्णन मिलता है. नन्दराज जिसे नन्दरायजी भी कहा गया है

एक करोड़ गोवंश रखने के कारण पदवी दी गयी थी. 1 करोड़ गोवंश में से 20 लाख गोवंश भगवान के जन्म के समय में ब्राहमणों को दान में दिया गया था.

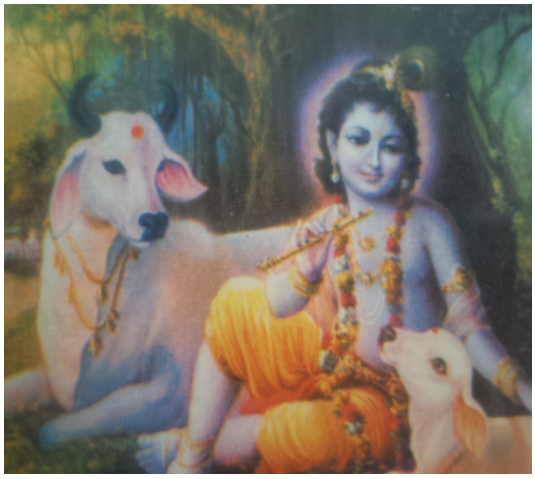

नंदरायजी के छोटे भाई 9 नंद प्रत्येक के पास में 9 लाख लंबे सींगो वाले गोवंश, 9 उपनंद प्रत्येक के पास में 5 लाख गोवंश थे. प्रत्येक गोप के पास में एक लाख गोवंश था.

एक करोड़ गोप व्रज में थे. दस हजार गोवंश के समूह को गोकुल कहा जाता है.

श्रीमद भागवत में गोपा-टमी के दिन से भगवान श्रीकृ-ण के गोचारण का वर्णन मिलता है.

भगवान श्री कृ-ण के द्वारा मात्र 11 साल 52 दिनों तक व्रज में रहकर नंदरायजी के लंबे सींगों वाले गोवंश का चमत्कारिक विकास कर लोगों को प्रेरित किया गया था.

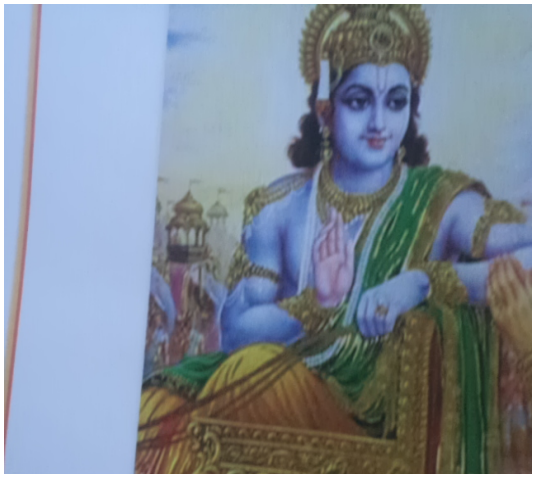

125 सालों के अपने मानव जीवन में भगवान श्री कृ-ण ने लंबे सींगों वाले गोवंश के विकास करने के लिए द्वारका में विशे-ा व्यवस्थाएं की थी.

द्वारका का ऐश्वर्य श्रीमद भागवत में वर्णन किया गया है. प्रतिदिन 4 लाख गायों का दान भगवान स्वयं पूजन के बाद में ब्राहमणों को करते थे.

श्रीमद भागवत के अनुसार द्वापर में कौशल के नग्नजीत के द्वारा लंबे सींगों के गोवंश का विकास चरम सीमा तक किया था. अपार ऐश्वर्य के कारण नग्नजीत को विश्व में जाना जाता था. अपनी पुत्री के विवाह में दहेज में नग्नजीत ने 9 अरब सेवक सुंदर वस्त्रों के साथ में दिये थे. सात सांढों को एक साथ नाथने की शर्त अपनी पुत्री सत्या के स्वयंवर में नग्नजीत के द्वारा रखी गयी थी.

द्वापर में अश्वनी कुमार के पुत्र सहदेव के द्वारा अंकोल के समान लंबे सींगों वाले गोवंश का विकास सबसे अच्छा किया गया था. सूर्य के पुत्र अश्वनी कुमारों के द्वारा सहदेव को जड़ीबटियों का ज्ञान दिया गया था. सहदेव के पास में नक्षत्रों के बारे में बहुत ही अदभुत ज्ञान था. राजा विराट के पास में लंबे सींगों वाले एक रंग के एक लाख गोवंश मोजूद थे. राजा विराट का गोधन लंबे सींगों के कारण बहुत ही प्रसिद्ध था. महाभारत के विराट पर्व में सहदेव के द्वारा विराट के दरबार में गुप्त एक साल के समय में युधि-ठिर के गोवंश के बारे में वर्णन करते हुए कहा गया था कि 8 लाख गोवंश के दस हजार वर्ग, दो लाख तथा 1 लाख के असंख्य वर्ग थे.

मैं ऐसे उत्तम लक्षण के बैलों को जानता हूं जिनका मूत्र मात्र सूंघ लेने पर बांझ स्त्री गर्भ धारण कर लेती है. 40 कोस में गोवंश की वृद्धि की गणना तथा उनका उपचार मैं कर लेता हूं. सहदेव के द्वारा सहदेव संहिता में अपने अनुभवों के बारे में विस्तार से जानकारियां दी गयी हैं.

श्रीमद भागवत के अनुसार इक्ष्वाकु के पुत्र नृग के पास में लंबे सींगों के गोधन के विकास करने के कारण ही अपार ऐश्वर्य था. लंबे सींगों वाले गोधन का विकास चरम सीमा पर था. नृग के द्वारा ब्राहमणों को अपार गोधन दान में दिया गया था.

श्रीमद भागवत के अनुसार अम्बरी-ा के पास में अपार ऐश्वर्य था. सातों द्वीपों का राज अम्बरी-ा के पास में था. अम्बरी-ा के द्वारा कई अश्वमेघ यज्ञ किये गये थे.

लंबे सींगों वाले गोवंश के चरम सीमा तक विकास करने के कारण पूरे विश्व में अम्बरी-ा का नाम प्रसिद्ध था.

अम्बरी-ा भगवान श्रीकृ-ण का परम भक्त था.

अम्बरी-ा ने मधुवन में एक साल तक व्रत कर तीन दिनों तक उपवास कर ब्राहमणों को भोजन करवाकर सींगों को सोने से मढवा कर तथा खूरों को तांबे से मढवा कर तथा दूध दोहने के पात्रों के साथ में सुंदर सोने के आभू-णों से अंलकृत तथा सुंदर

वस्त्रों से सुसज्जित 60 करोड़ गोवंश का दान किया था.

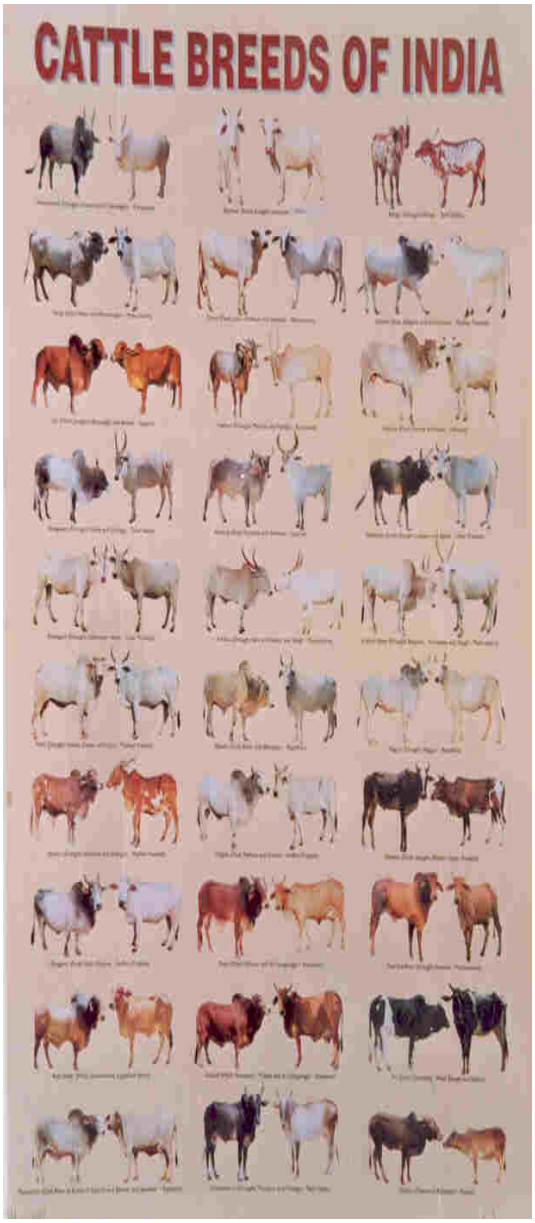

ओखलामा विश्वविद्यालय अमेरिका के द्वारा प्राप्त जानकारी के अनुसार अंकोल वाटसी नस्ल का विकास आफ्रीका में 2000 वर्षों पूर्व पाकिस्तान तथा भारत से प्राप्त भारतीय गोवंश के द्वारा इजीप्सीयन लोंगहोर्न के साथ क्रोस करवा कर किया गया है.

आफ्रीका में पाये जाने वाले सांगा भारतीय गोवंश का आधार पाकिस्तान तथा भारत से लाये गये गोवंश हैं.

सांगा नस्ल में जेबू के कुछ अलग गुण पाये जाते थे.

विकसित कंधे तथा सींग उपर की ओर मुडे हुए रहते थे.

आफ्रीका की जातियों ने बाद में अपने अनुसार सांगा नस्लों को विकसित किये थे जिसके कारण आकार तथा सींगों में परिवर्तन देखने मिले थे. आफ्रीका में लम्बे सींगों वाली नस्लें बाहेमा, कीगेजी, वाटसी हैं.

आफ्रीका में पायी जाने वाली तीन प्रजातियों में बाशी, टूटसी और बाहेमा हैं.

बाहेमा के सींग छोटे होते हैं.

टूटसी के सींग सबसे लम्बे होते हैं.

अंकोल का उपयोग खेती करने के लिये होता है. अंकोल नस्ल पूर्वी अफ्रीका के मोबूतू झील से तांगानयीका झील के बीच में मौजूद है.

13 वी से 15 वी सदी के बीच में हेमिटिक जाति ने उत्तरी यूगांडा में अंकोल नस्ल को लाया था.

provided by Dr Alberto Zorloni, DVM

अंकोल को वहां के खतरनाक कीटों ने दक्षिण की ओर जाने के लिये मजबूर कर दिया था.

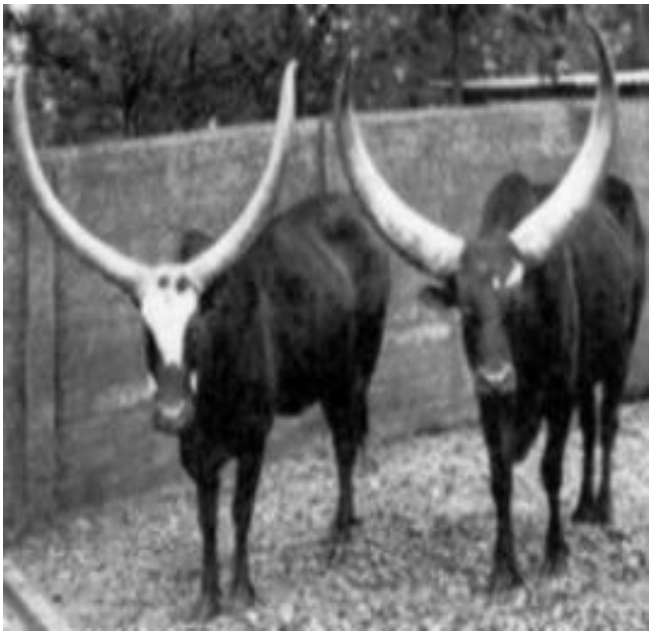

हीमा या बहेमा जातियों ने यूगांडा, केनिया, तंजानिया के विकटोरिया झील के किनारे पर बसना प्रारम्भ किया था.

वातुसी या टूटसी जाति रवांडा तथा बूरुंडी में ही रहने लगी थी. वहां से झेर जिले में रहने चली गयी थी.

इन सभी जातियों ने सींग के आकार का चुनाव कर पाला था. पूरी तरह से सही अंकोल नस्ल मध्यम लम्बे सिर, छोटी गर्दन, पतली छाती वाली होती है.

आफ्रीका में अंकोल मंहगे दामों में खरीद कर पाली जाती है.

अंकोल को अपने साथ उत्सव मनाने के लिये पालते हैं.

अंकोल उत्पादकता के लिये नहीं पाली जाती है.

अंकोल वाटसी नस्ल का इतिहास 6000 वर्षों से पहले का है.

अंकोल वाटसी के बारे में कहा गया है कि 4000 वर्षों पूर्व नील घाटी में लोंगहोर्न हम्पलेस पालतु जानवर मौजूद थे.

इजीप्ट के पिरामिडों में अंकोल वाटसी नस्ल का उल्लेख किया गया है.

2000 वर्षों बाद नील घाटी से इथोपिया तथा सोमालिया अंकोल वाटसी नस्ल पहुंच गयी.

इथोपिया से सूडान, युगांडा, केनिया, पूर्व आफ्रीका में अंकोल वाटसी नस्ल पहुच गयी.

आफ्रीका से 19 वी एवं 20 वी शताब्दी में यूरोपियन झू में अंकोल वाटसी नस्ल को उसके भव्य सींगों तथा सुंदर दिखने के कारण आयात किया गया.

जर्मनी, स्वीडन, इंगलेंड के गेम पार्क एवं झू ने भी आफ्रीका से अंकोल वाटसी को आयात किया.

1920 से 1930 के बीच में अमेरिका में भी अंकोल वाटसी को यूरोपियन झू से आयात किया गया.

1978 से पूर्व ही उत्तरी अमेरिका में अंकोल वाटसी के प्रति जागृति आ गयी थी इसलिये उत्तरी अमेरिका में जनवरी 1983 में अंकोल वाटसी नस्ल के प्रति संपूर्ण जागृति उत्पन्न करने के लिये अंकोल वाटसी इंटरनेशनल रजिस्ट्री का गठन किया गया था.

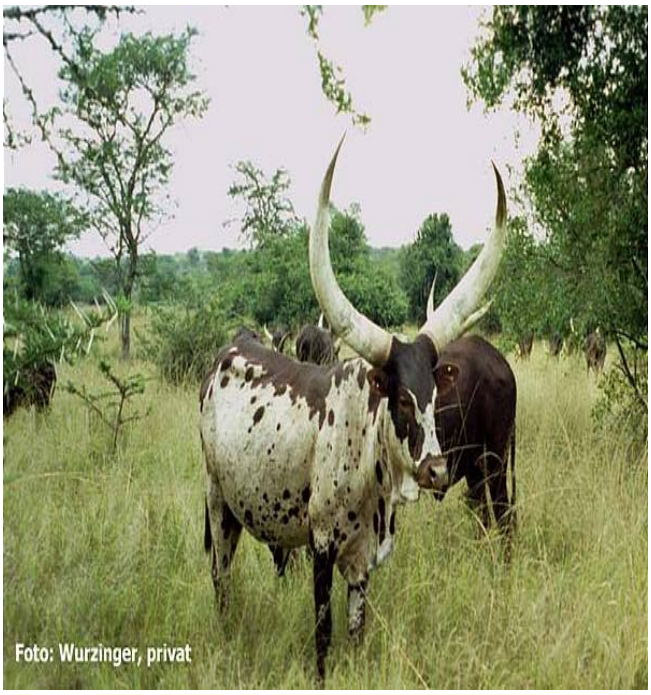

5 माह के भीतर ही 74 सदस्यों ने अपनी अलग अलग आवश्यकताओं के लिये अंकोल वाटसी के बारे में संपूर्ण जानकारियों को एकत्रित करना प्रारम्भ किया था.

अमेरिका में अंकोल नस्ल का उपयोग अंकोल वाटसी नस्ल के संपूर्ण विकास करने के लिये किया गया.

अंकोल नस्ल आफ्रीका में पायी जाती है.

अंकोल नस्ल का रंग परिवर्तित है.

अंकोल को युगांडा में नकोल जाति पालती है. रवांडा में वाटसी की इंकुकु आम रुप से पायी जाती है. टुटसी के राजा के पास इनीएमबो पायी जाती है.

आफ्रीका में अंकोल वाटसी का उपयोग मांस के लिये कभी नहीं किया गया क्योंकि आफ्रीका की

आदिवासी जातियां दूध तथा दूध से बने पदार्थों के लिये ही पालती थी.

आफ्रीका में आदिवासियों में हमेशा मालिक की पहचान उसके द्वारा पाले जाने वाले गोधन से होती थी.

आफ्रीका में गोधन को सामाजिक सम्मान के रुप में ही पालने की परम्परा रही है.

अंकोल गाय को दिन भर चरने के लिये छोड दिया जाता था तथा शाम को चरने के बाद बछडे को भर पेट दूध पिलाने के लिये वापस लाया जाता था. सुबह भी बछडे को भर पेट दूध पिलाने दिया जाता था.

अंकोल कम दूध देती थी इसलिये बछडे कम आयु में मृत्यु पाते थे.

10 साल तक सरकार ने अधिक दूध के उत्पादन के लिये प्रयास किये थे. बीमारियों और

अकाल के कारण ही सरकार के प्रयासों को कमजोर करते चले गये.

अंकोल वाटसी गाय का भार 400 से 600 किलो तक है. बैल का भार 500 से 800 किलोग्राम रहता है. नवजात बच्चे का भार 15 से 30 किलो तक होता है. नवजात का कम भार अंकोल वाटसी बैलों को दूसरी नस्ल सुधारने के लिये उपयोगी बनाता है.

अकोल वाटसी एक दिन में 20 से 120 डिग्री फेरेन्हाइट बदलते तापमान वाले मौसम में आसानी से जी लेती है. अमेरिका में नस्ल सुधार के लिये अंकोल वाटसी का उपयोग किया गया.

अमेरिका में अधिक वसा के लिये अंकोल वाटसी का उपयोग किया गया.

विश्व की सबसे अधिक वसा 10 प्रतिशत अंकोल वाटसी के दूध में पायी जाती है. अमेरिका में 5 सालों में 3 बार अध्ययन करने पर पाया गया कि अंकोल वाटसी के मांस में कम वसा तथा कम कोलेस्ट्रोल है इसलिये अंकोल वाटसी के मांस की मांग अमेरिका में बहुत ही अधिक है. अमेरिका अंकोल वाटसी को पूरी तरह से सुरक्षित रखने के लिये बहुत ही अधिक जागरुक है. अमेरिका बहुत अधिक खर्च कर निरन्तर अनुसंधान कर रहा है.

भारत में गोवंश के दूध में अधिक वसा प्राप्त करने के लिये अंकोल वाटसी के माध्यम से नस्ल सुधारने के लिये विश्व हिंदु परि-द के श्री सुनील जी मानसिंगा गो विज्ञान अनुसंधान केंद्र चितारों की गली व्यास भवन, महाल नागपुर को भी गंभीरता से कार्य प्रारम्भ करना है.

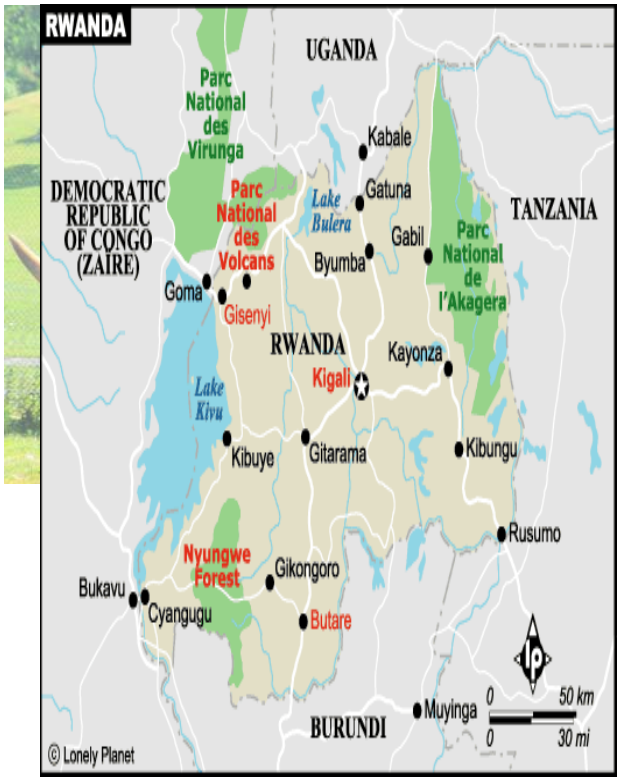

श्री रामचंद्रपुरम मठ हानिया में होशानगर तहसील सिमोगा जिले में कर्नाटक राज्य में 36 वें शंकराचार्य जी को भी विश्व की सबसे महत्वपूर्ण पुरानी भारतीय गोवंश अंकोल प्रजाति की ओर पूरा ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है. भारत में 7000 साल के बाद में एक बार फिर से अंकोल गोवंश को घर घर में लाने के लिए लहर उत्पन्न करने की आवश्यकता है. उनके द्वारा करोड़ों का खर्च करके भारतीय गोवंश के संवर्धन करने के लिए पहली बार 21 अप्रेल से 29 अप्रेल 2007 तक विश्व गो सम्मेलन का आयोजन किया गया था जिसमें 20 लाख लोगों ने बहुत ही उत्साह के साथ में भाग लिया था. 9 घंटों तक चिंतन किया गया था.

अंकोल वाटसी के मोटे तथा मजबूत भारी भरकम सींगों के कारण बहुत ही अधिक गरमी सहन करने की क्षमता बहुत ही अच्छी है क्योंकि सींग में से खून प्रवाहित होकर तेजी के साथ ठंडा हो जाता है. अंकोल वाटसी का रंग लाल रहता है. अंकोल वाटसी नस्ल को आफ्रीका के राजघराने के गोवंश के रुप में जाने जाते हैं. अंकोल वाटसी को भारत में पूरी तरह से विकसित करने के लिये गोशालाओं में योजनाबद्ध तरीके से कार्य करने की आवश्यकता है.